

**अचवना स.क्रि.** (तद्.) 1. आचमन करना, पान करना, पीना 2. छोड़ देना **अ.क्रि.** भोजन के बाद कुल्ला आदि करना।

**अचाका क्रि.वि.** (तद्.) अचानक, अकस्मात्, सहसा।

**अचानक क्रि.वि.** (तद्.) बिना पूर्व सूचना के, सहसा, एकदम, अकस्मात्, औचक।

**अचार पुं. (फा.)** मिर्च, राई, मसाला आदि मिला कर आम, नींबू आदि फलों अथवा सब्जियों से बनाया गया विशेष चटपटा खाद्य पदार्थ, जो तेल या सिरका डालने के कारण कई दिनों तक सुरक्षित रहता है। **पुं. (तत्.)** आचार, आचरण।

**अचारज पुं. (तद्.)** आचार्य, दाह-संस्कार के समय क्रिया-कर्म कराने वाला महाब्राह्मण।

**अचारी वि. (तद्.)** 1. अचार बनाने के काम आनेवाला जैसे- अचारी नींबू 2. आचार से संबंधित, आचार-विचार का ध्यान रखने वाला **पुं. (तद्.)** यज्ञ कर्मोपदेशक, वेदज्ञ **स्त्री. (तद्.)** फल को छील कर नमक-मिर्च आदि से बनाया जाने वाला खट्टा या खट्टा-मीठा खाद्य पदार्थ।

**अचाह स्त्री. (तद्.)** 1. चाह या इच्छा का अभाव, अनिच्छा 2. अरुचि 3. अप्रीति **वि. (तद्.)** बिना चाह का, जिसकी कुछ अभिलाषा न हो, निष्काम।

**अचाहा वि. (तद्.)** 1. न चाहा हुआ, अवांछित, अनिच्छित, अनभीष्ट 2. जिसमें रुचि न हो 3. जो प्रेमपात्र न हो 4. प्रीति-रहित।

**अचिंत वि. (तत्.)** 1. चिंतारहित, बेफिक्र, निश्चिंत 2. अचिंतनीय।

**अचिंतनशील वि. (तत्.)** चिंतन रहित, बिना सोचे-समझे काम करनेवाला, बिलो. चिंतनशील।

**अचिंतनीय वि. (तत्.)** जिसका चिंतन न हो सके, जो ध्यान में आ न सके; जो चिंतन या ध्यान करने योग्य नहीं हो, बिलो. चिंतनीय।

**अचिंता स्त्री. (तत्.)** चिंता का अभाव, लापरवाही।

**अचिंतित वि. (तत्.)** 1. जिसका चिंतन न किया गया हो, अविचारित, जिस पर विचार न किया गया हो 2. आकस्मिक, अप्रत्याशित।

**अचिंत्य वि. (तत्.)** 1. जिसका चिंतन न हो सके, जो ध्यान में न आ सके 2. जिसकी चिंता नहीं की जानी चाहिए, चिंता के अयोग्य 3. बिना सोचा-विचारा, आकस्मिक।

**अचित वि. (तत्.)** 1. अविचारित 2. एकत्र न किया गया 3. अचेतन, जड़।

**अचितवन वि. (तद्.)** चितवन-रहित।

**अचिति स्त्री. (तत्.)** असंग्रह, अचयन 1. संग्रह या चयन के न होने की स्थिति 2. चिति अर्थात् ज्ञान का न रहना, अज्ञान।

**अचित्त वि. (तद्.)** 1. विचार या ध्यान में न आने योग्य 2. अविचारित, जिस पर विचार न किया गया हो 3. जो समझ के परे हो 4. निर्बुद्धि, अज्ञान।

**अचिर क्रि.वि. (तत्.)** 1. शीघ्र, जल्दी 2. थोड़े समय पूर्व, कुछ समय पहले।

**अचिरांशु [अचिर-अंशु] पुं. (तत्.)** क्षणमात्र में किरण या प्रकाश दे देने वाली विद्युत, बिजली।

**अचिराभा [अचिर+आभा] स्त्री. (तत्.)** बिजली, विद्युत।

**अचिह्नित वि. (तत्.)** 1. जिस पर कोई चिह्न न लगा हो 2. (भाषा.) किसी शब्द का लिंग, वचन आदि कोटियों के लिए चिह्नित न होना बिलो. चिह्नित।

**अचीता वि. (तद्.)** 1. अचिंतित, बिना सोचा-विचारा, जिसका अंदाज न हो 2. बेफिक्र, निश्चिंत 3. असंभावित, आकस्मिक।

**अचीर वि. (तत्.)** चीरविहीन, वस्त्ररहित।

**अचूक वि. (तत्.)** 1. जो न चूके, जिसका निशाना खाली न जाए, जो लक्ष्य पर सही बैठे, अमोघ, जैसे-अचूक दवा 2. जिसमें भूल न हो, भ्रमरहित, निश्चित।